Vol.8 June 2015 No.11
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

है ओ३म् जगत् का कलाकार

–प्रियवीर हेमाइना

ओ३म् से कर लो तुम सब प्यार,
समझ लो इसे जीवन का सार।
बनता मानव वह ाानदार,
ओ३म् से करता जो भी प्यार।।

राम–कृष्ण का भी यही विचार,
है ओ३म् जगत् का कलाकार।
ाक्ति उसकी है अपरंपार,
सभी करते उसको नमस्कार।।

आते उसी में सब सुविचार,
भर जाता उसमें सदाचार।
मिलती विजय ही आखिरकार,
ओ३म् से करता जो भी प्यार।।

ऋषियों ने जाना यही सार,
मुनियों ने माना इसे आधार।
यतियों ने की यही हुंकार,
है कृपा ओ३म् की सर्वाधार।।

सब देखते उसमें चमत्कार,
उसे नमन करता यह संसार।
खुलता उससे मुक्ति का द्वार,
ओ३म् से करता जो भी प्यार।।

है ओ३म् ही सष्टि–सजनहार,
अनुपम अनादि वह निराकार।
उपासना उसी की सुखाधार,
मिलता उससे ही मोक्षद्वार।।

है सच्चा ाव वही ओंकार,
समझे दयानन्द, यही सार।
छोड़ा था उसने स्वघरबार,
सच्चे ाव से किया था प्यार।।

चलें ओ३म् की आज्ञानुसार,
करते रहें सबका उपकार।
करें हम ऐसा सद्व्यवहार,
जगत् करे सदा जय–जयकार।।

318, विपिन गार्डन,
उत्तम नगर,नई दिल्ली–1110059
मो. 7503070674

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के विचार

- मन–वचन–कर्म से हम जो भी कार्य करते हैं उन सभी कर्मों का उत्तरदायित्व स्वयं हमारा है, हम स्वयं कर्ता हैं, मन, इन्द्रियाँ तो जड़ हैं।
- हँसी–मज़ाक करते समय व्यक्ति को बाह्यवत्ति के रूप में व्यर्थ और अनाव यक विचार–चिंतन करना पड़ता है ताकि सामने वालों का अधिकाधिक मनोरंजन हो सके। इस स्थिति में मन की चंचल अवस्था होती है।

Brahmarpan June 2015 Vol. 8 No.11
ज्येष्ठ–आषाढ 2072 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION
C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org

of Delhi Arya Pratinidhi Sabha
Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. है ओ३म् जगत् का कलाकार 2
–प्रियवीर हेमाइना
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्शन 8
–डॉ. भारत भूषण
4. वीर सावरकर का माफीनामा 9
नहीं ौर्यपूर्ण कारनामा
–राजे ा कुमार 'रत्ने ा'
5. क मीर के हिन्दुओं के दर्द को कौन सुनेगा? 17
–अवध कि ाोर
6. रानी लक्ष्मीबाई की चिरविदाई 20
–परमे वर प्रसाद सिंह
7. इस्लाम और जिहाद सिक्के के दो पहलू *25*
–दत्तात्रय तिवारी
8. MAHABHARATA 31
An Epic - A poet's Fancy or a Historical Reality
-N.K. Chowdhary

संपादकीय

नेपाल में भूकंप की विना ालीला

25 अप्रैल को और फिर 12 मई को नेपाल में अस्सी वर्ष बाद रिक्टर स्केल पर क्रम ाः 7.9 और 7.4 तीव्रता के दो विना ाकारी भूकंप आए। इनके केन्द्र क्रम ाः नेपाल की राजधानी काठमांडु से उत्तर-पि चम में 80 किलोमीटर दूर पोखरा व लामजुंग क्षेत्र में 10 किलो मीटर की गहराई पर और दूसरे भूकंप का केन्द्र काठमाण्डु से उत्तर की ओर ऐवरेस्ट के बेस कैंप के निकट 60 किलो मीटर दूर कोडारी और सिंधुपाल चौक के पास 19 कि.मी. की गहराई में था। इन भूकंपो ने नेपाल और उत्तर भारत के वि ाल क्षेत्र को दहला दिया। भूकंप से लगभग 8600 लोग मारे गए। भूकंप से नेपाल की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व की कई इमारतें ध्वस्त हो गईं, जिनमें प्रमुख हैं काठमांडु के दरबार स्क्वेयर में स्थित हनुमान ढोका, पाटन स्क्वेयर तथा अनेक मंदिर, मीनारें और महल जो यहाँ की ऐतिहासिक विरासत के रूप में विदे ाी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र थे। यहाँ के बसन्तपुर दरबार स्क्वेयर में कुमारी देवी का मंदिर है जहाँ प्रतिदिन कुमारी देवी की पूजा होती है। यह तिमंजिला स्थापत्य कला का आ चर्यजनक भवन दैवरक्षित खड़ा है जबकि आस-पास के मंदिर और महल मलबे में परिवर्तित हो गए हैं। इसके अतिरिक्त नेपाल के सुप्रसिद्ध प ुपतिनाथ मंदिर को आं ाक क्षति हुई है अन्यथा वह पूर्णरूप से सुरक्षित है। महात्मा बुद्ध का प्रसिद्ध स्वयंभूस्तूप पूर्णरूप से मलबे का ढेर बन गया है बस एकमात्र बुद्ध की प्रतिमा सुरक्षित बची है। इधर निकट ही ध्वंसाव ोष मंदिर में एक बड़ा पीतल का घंटा बचा रहा है बाकी सब नष्ट हो गया। यूनेस्को ने दरबार स्क्वेयर को वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया हुआ था।

काठमांडु घाटी के चार प्रमुख ऐतिहासिक नगर पाटन, भक्तपुर, कीर्तिपुर और ललितपुर हैं। इनमें सुंदर नक्का ाी वाले मंदिर और राजमहल बहुमंजिले पगोड़ों की तरह बने हैं। इनमें कुछ इमारतें तो पाँचवीं ाताब्दी की हैं तथा ोष 17वीं ाताब्दी की हैं। इनके निर्माण में हिन्दू और बौद्ध स्थापत्य कला का प्रभाव दिखाई देता है।

काठमांडु की प्रसिद्ध धरहरा मीनार, जिसे भीमसेन मीनार भी कहते हैं पहली बार 1934 के भूकंप में ध्वस्त हो गई थी। इसका दुबारा निर्माण कराया गया था जो नेपाल के सामूहिक गौरव की प्रतीक मानी जाती थी। इसके पुनःध्वस्त हो जाने से यहाँ के आत्मवि वास को गहरा धक्का लगा है। धरहरा मीनार को नेपाल का कुतुबमीनार भी कहा जाता था।

गोरखा दरबार काठमांडु से 141 कि.मी. उत्तर पि चम में बहादुर गोरखा सैनिकों का 400 साल पुराना गोरखनाथ मंदिर ध्वस्त हो गया है परन्तु गोरखा ाक्ति का प्रतीक गोरखों का किला इस भीषण भूकंप को सह कर ससम्मान खड़ा है। इसी गोरखा क्षेत्र के सैकड़ों जवान पीढ़ियों से भारतीय और ब्रिटि ा सेना के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। इस समय भारतीय सेना की सात रेजिमेंटों में 39 बटालियनें गोरखों की हैं।

नेपाल के इस भूकंप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तत्परता से नेपाल को सहायता पहुँचाई उसकी यूनेस्को और वि व के सभी दे ाों ने प्र ांसा की। पौने बारह बजे भूकंप की सूचना मिलने के बाद पौने पाँच बजे दिल्ली से एन डी आर एफ की राहत टीम एयरफोर्स के वि ोष विमान से नेपाल के लिए रवाना कर दी गई। बाद में यहाँ से दस रेस्क्यू टीमें भी भेजी गईं। इस सारे कार्य का निरीक्षण स्वयं प्रधानमंत्री करते रहे। भूकंप की भीषणता को देखते हुए यूनेस्को और अन्य दे ाों ने भी राहत टीमें भेजीं और आर्थिक सहायता का आ वासन दिया। इस भीषण भूकंप से हुए विना ा के बाद नेपाल के पुनर्निमाण में 10 बिलियन यू.एस-डालर खर्च होने का अनुमान है। भारत ने भी यथासंभव अधिक से अधिक आर्थिक सहायता देने का आ वासन दिया है।

भूकंप के समय 20,000 के लगभग भारतीय नेपाल में थे। उनमें से अधिकां ा को बसों और विमानों से निकाला गया जबकि अंतिम सूचना प्राप्त होने तक वहाँ भूकंप से 75 भारतीयों की मत्यु हो गई।

प्र न है कि भूकंप क्यों आते हैं?

प्राचीन काल से मानव के सम्मुख भूकंप एक विकट समस्या रही है। भिन्न-भिन्न जातियों में इनके अलग-अलग कारण बताए जाते रहे हैं। कोई पथ्वी को ोषनाग के फन पर स्थित बताता है तो कोई कछुए या वराह की पीठ पर टिका मानते हैं। उनके अनुसार इन जन्तुओं के हिलने-डुलने से भूकंप आते

हैं। परन्तु ये सब भ्रान्तियाँ हैं।

1874 ई. में वैज्ञानिक एडवर्ड जुस ने अपनी खोजों के आधार पर बताया कि भूकंप भ्रं ा (Fault) की सीध में भूपर्पटी (earth plates) के विखंडन या फिसलने से आते हैं। इन भूकंपों को विवर्तनिक (Tectonic) भूकंप कहते हैं। भूवैज्ञानिकों के अनुसार वर्तमान युग में भूकंप उन्हीं पर्वतीय प्रदे ाों में अधिक आते हैं जो नवनिर्मित होते हैं। भारत में ऐसे ही (Tectonic) भूकंप आते हैं।

इंडियन प्लेट और यूरे ियन प्लेट के टकराने से भारतीय उपमहाद्वीप लगातार उत्तर-पूर्व की ओर सरक रहा है। इससे पथ्वी में दबाव पैदा हो रहा है। वाड़िया इन्स्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी के भूकंप विभाग के अध्यक्ष डॉ. सु ील कुमार के अनुसार प्लेटों के लगातार गति ील रहने और दबाव बनने से हिमालय क्षेत्र में अधिक भूकंप आते हैं। वर्तमान भूकंप में भारत का भूभाग नेपाल की ओर 1 से 10 फीट सरक गया है।

जापान से सबक लें – भारत को भी जापान की तरह भूकंप से होने वाली क्षति से बचाव के लिए भूकंपरोधी तकनीक को अपनाने की आव यकता है। इस तकनीक से भूकंप आने पर ऊँची इमारतें भी झुककर फिर से खड़ी हो जाती हैं।

वि व और भारत में अतीत में आए कुछ भूकंपों का विवरण निम्नलिखित है:-

सन् 1960 के बाद से अब तक वि वभर में रिक्टर स्केल पर 8 से अधिक तीव्रता वाले कई भूकंप आए हैं। इनका विवरण नीचे दिया हैं।

1. चिली में 22 मई 1960, 27 फरवरी 2010 और 11 नवम्बर 1922 को क्रम ाः 9.5, 8.8 और 8.5 तीव्रता के भूकंप आए। इनसे जन-माल का भारी नुकसान हुआ और इस क्षेत्र में सुनामी आई और क्रम ाः 1716, 524 लोग मारे गए।

2. अलास्का में 28 मार्च 1964 और 4 फरवरी 1965 को क्रम ाः 9.2 और 8.7, तीव्रता के भूकंप आए जिनमें सुनामी के कारण 131 लोग मारे गए। यहाँ सुनामी से 35 फीट ऊँची लहरें उठीं।

3. रूस के केमचात्का में, 4 नवम्बर 1952 को तथा 3 फरवरी 1923 को क्रम ाः 9.0 और 8.5 तीव्रता के भूकंप आए और सुनामी में 30 फीट ऊँची लहरें उठीं।

4. इंडोने िाया में 26 दिसम्बर 2004 और 10 फरवरी 1938 को

क्रम ाः 9.1 और 8.5 तीव्रता के भूकंप आए। इनमें पहले भूकंप से जो सुनामी आई उससे 12 दे ाों के 230,000 लोग मारे गए। इंडोनेि ाया के सुमात्रा में 11 अप्रैल 2012 और 12 सितंबर 2007 को क्रम ाः 8.6 और 8.5 तीव्रता के भूकंप आए। जिसकी सुनामी की चेतावनी 12 दे ाों को दी गई इसमें 25 लोग मारे गए।

5. इक्वाडोर में 31 जनवरी 1906 को 8.8 तीव्रता का भूकंप आया। यहाँ उठी सुनामी की ऊँची लहरों से 500 से अधिक लोग मारे गए।

6. तिब्बत में 15 अगस्त 1950 को 8.6 तीव्रता का भूकंप आया। इसमें कम से कम 780 लोग मारे गए।

7. क्यूराइल में 13 अक्टूबर 1963 में 8.5 तीव्रता का भूकंप आया और सुनामी की ऊँची लहरें उठीं।

भारत में भी अतीत में कुछ भीषण भूकंप आए जिनसे दे ा के विभिन्न क्षेत्रों को काफी क्षति सहन करनी पड़ी। ये भूकंप थे–

1. बिहार में 1934 में रिक्टर स्केल पर 8.1 तीव्रता का भूकंप आया इसका केन्द्र नेपाल में था जिसमें 30,000 लोग मारे गए।

2. महाराष्ट्र में 1993 में रिक्टर स्केल पर 6.4 तीव्रता का भूकंप आया जिसमें 20,000 लोगों की मौत हुई।

3. असम में 1950 में रिक्टर स्केल पर 8.6 तीव्रता का भूकंप आया जिसका केन्द्र तिब्बत में था। इसमें 1500 लोगों की मत्यु हुई।

4. उत्तरका ाी (उत्तराखंड) में 1991 में रिक्टर स्केल पर 6.1 तीव्रता का भूकंप आया। इसमें 1000 लोगों की मौत हुई।

5. गुजरात (भुज) में गणतंत्र दिवस पर रिक्टर स्केल पर 7.7 तीव्रता का भूकंप आया। इसमें भुज का क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित हुआ। इसमें 20,000 लोग मारे गए और भारी क्षति हुई।

6. 1905 में कांगड़ा (हि.प्र.) में भयंकर भूकंप आया। जिससे कांगड़ा ाहर पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गया था।

इन सभी भूकंपों में जान–माल की अत्यधिक क्षति हुई। भारतीय/ऑस्ट्रेलियाई और अमेरिकी वैज्ञानिकों ने भू वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि उत्तराखण्ड क्षेत्र में दो महाद्वीपीय प्लेट्स के किनारे अत्यधिक खतरनाक स्थिति में है। जिससे इस क्षेत्र में भयंकर भूकंप आने की संभावना है।

संपादक

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-89)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

कार्य से कारण का अनुमान होता है, यह पूर्व कहा जा चुका है। अब प्रसंगानुसार कार्य का स्वरूप बताया जाएगा। कार्यमात्र के ये सब धर्म कार्य का स्वरूप बताते हैं, सूत्र है-

हेतुमदनित्यं सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।।89।।

अर्थ-(हेतुमत्) किसी कारण से उत्पन्न (अनित्यं) अनित्य (सक्रियं) क्रियावान् (अनेकं) विविध रूपवाला (आश्रितं) आश्रित (लिङ्गम्) लिंग (कार्य) है।

भावार्थ - प्रत्येक हेतुमान् पदार्थ कार्य होता है। हेतुमान् से अभिप्राय है कि जो किसी कारण से उत्पन्न हुआ हो (अनित्यं) विनाशी हो (सक्रियं) क्रियावान् हो, जिससे गति-आगति आदि क्रिया होती रहती हों (अनेकं) जो विविध रूपों वाला हो। यद्यपि मूलकारण प्रकृति में भी अनेक सत्व, अनेक रजस्, तथा अनेक तमस् हैं। वे स्वरूप से अनन्त हैं तथापि उस समय साम्य अवस्था में रहने से वैषम्य जनित विविधता का वहाँ अभाव रहता है। सूत्र में 'अनेक' शब्द में जगत् में अनुभव की जाने वाली विविधता का ग्रहण किया जाना संगत होगा, जो अव्यक्त अवस्था में नहीं है। आश्रित कारण के सहारे पर रहना, प्रत्येक कार्य अपने कारण के आश्रित रहता है। लिंग जो अपने कारण में लयभाव को प्राप्त हो जाता है अथवा जो लीन-अन्तर्हित छिपे हुए अतीन्द्रिय कारण का बोध कराता है। कार्य से अतीन्द्रिय कारण का अनुमान होता है।- यह सिद्धान्त अनेक स्थानों पर प्रतिपादित किया जा चुका है। हेतुमत्, अनित्य, क्रियावान, अनेक, आश्रित और लिंग-यह कार्य का स्वरूप है। कोई कार्य हो, उसमें हेतुमत्ता आदि कार्य अवयव पाए जाते हैं। अतः ये कार्यमात्र के साधर्म्य हैं। मूलकारण अव्यक्त में हेतुमत्ता आदि धर्म नहीं रहते इसलिए कार्य के साथ मूल प्रकृति का यह वैधर्म्य समझना चाहिए।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

वीर सावरकर का माफीनामा नहीं, ौर्यपूर्ण कारनामा

–राजे ा कुमार 'रत्ने ा'

वीर विनायक दामोदर सावरकर से कालापानी जेल में नवम्बर 1920 में नारायण सावरकर को पुनः अपने भ्राताओं से भेंट करने की अनुमति मिली। इस बार वे सावरकर की पत्नी श्री मती यमुनाबाई के साथ ही आए थे। सावरकर को इस भेंट से जहाँ अतीव प्रसन्नता हुई, वहीं दुःख भी हुआ कि इस बार उनका भाई जब उनके दुर्बल ारीरों को देखेगा, तो उसे निरा ा होगी। वे स्वयं इस बात को अनुभव कर रहे थे कि ायद यह अन्तिम भेंट हो। अनुज को पारिवारिक दायित्वों को निभाते रहने का उपदे ा भी दिया। पिछली भेंट के समान यह भेंट भी अल्पकालिक रही। धरती के प्रत्यक्ष नरक में रहकर सावरकर के जीवन में कई बार निरा ा के पल आये, पर अपनी स्वाध्याय ील प्रकृत्ति के कारण सावरकर ने उन पर विजय प्राप्त की। जहाँ आजन्म कारावास की सजा पाकर आये मानसिंह लाठी–डण्डों की पिटाई और क्षय रोग के कारण ाहीद हो गये, धर्मवीर रामरक्खा हुतात्मा बन गये, कितने ही रामचरणदास फाँसी को जीवन मुक्ति का साधन मानने लगे थे। ऐसे वातावरण में रहकर यदि सावरकर के मन में निरा ा के बादल छा जाएँ तो कोई आ चर्य की बात नहीं है। ऐसी नारकीय व भेदभाव से परिपूर्ण परिस्थिति में कुछ सुविधा पाने या उससे बाहर निकलकर मातभूमि की सेवा करने के लिए यदि सावरकर ने आवेदन पत्र लिखे भी तो केवल इसी के कारण ही उन्हें घणित, कायर व राष्ट्रद्रोही नहीं कहा जा सकता। नीति व बुद्धिहीन लोगों ने इसी बात को लेकर दे ा के लिए तिल–तिल कर गलने वाले महान स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के चरित्र पर कीचड़ उछालने की नादानी की। संस्कृत के कवि ने राजनीति को वारांगना (वे या) कहा है। यह बात आज भी सत्य है। इस भारत दे ा में एक तरफ तो सावरकर जैसे राष्ट्रभक्त को अपमानित किया जाता है और दूसरी तरफ गाँधी के भक्त होने का दम्भ भरने वाले नेता उस मोहम्मद अली जौहर की जीवनी को प्रकाि ात करवाते हैं, जिसने दुराचारी व पतित मुसलमान को भी गाँधी से श्रेष्ठ माना था। इसके विषय में नेहरु ने लिखा था कि वह हद दर्जे का मतांध है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जिसे दे ाभक्त मानने से इन्कार

किया था, जिसने वन्देमातरम् का विरोध किया था, जिसने पं. मोतीलाल नेहरु की रिपोर्ट का विरोध कर मुसलमानों को एक-तिहाई प्रतिनिधित्व देने की माँग का समर्थन किया था। जिसने मुसलमानों को सविनय अवज्ञा आन्दोलन से दूर रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जिसके कारण खिलाफत आन्दोलन मोपला दंगों के रूप में बदला, जिसमें हिन्दू स्त्रियों को जबरन मुसलमान बनाया गया। गाँधी-नेहरु की छत्रछाया में पलने व चलने वाली सरकार द्वारा उनके कट्टर विरोधी व्यक्ति की जीवनी प्रकाि ात करवाने तथा उसके नाम पर उर्दू-फारसी और अरबी की पढ़ाई के लिए वि वविद्यालय स्थापित करने तथा उसकी जयन्ती भव्य रूप से मनाने आदि कार्य तो ायद धर्मनिरपेक्षता की श्रेणी में आते हैं और संसद में सावरकर का चित्र लगाने को सांप्रदायिक कहकर विरोध किया जाता है। हाय! यह कैसा लोकतन्त्र है?

अब हम आवेदन पत्र के विषय पर आते हैं, जिसके कारण ईर्ष्यालु लोग सावरकर पर आक्षेप लगाते हैं कि उनके आवेदन पत्रों में मुख्यतः सुविधाओं को माँग ही होती थी। सावरकर ने 'मेरा आजीवन कारावास' में लिखा है- आज जेल अधीक्षक को दो आवेदन पत्र भेजे। डोंगरी से यहाँ आते ही नियमित मिलने वाला दूध बन्द कर दिये जाने से तथा यहाँ ज्वार की रोटी खाने से पेट ठीक नहीं रहता था। इसलिए दूध फिर से दिलाए जाने का अनुरोध किया था। दूसरा अनुरोध था कि मुझे पुस्तकें मिलती रही हैं जो अब छीन ली गई हैं, उनमें से कोई एक पुस्तक मुझे पढ़ने को दी जाये। यह वर्णन भयखला जेल का है। पुस्तक के रूप में बाईबिल मिली, पर दूध नहीं।

"मैंने इससे पहले एक आवेदन लिखा था। उसमें अपने लिए जो दो आजन्म कारावास की सजाएँ थीं, उन्हें एक साथ चलाने की प्रार्थना की थी। यह भी स्वीकार्य नहीं हुई। मैं यह अनुभव करता था कि कारागार से बाहर रहकर ज्यादा प्रचार कार्य किया जा सकता है। इसलिए एक वर्ष पूर्ण होते ही बाहर भेजे जाने का आवेदन स्वीकार नहीं हुआ।

'ब्रिटेन-जर्मनी युद्ध' : असहाय स्थिति में होने के बावजूद दो बड़ी ाक्तियों के बीच चल रहे युद्ध से हिन्दुस्तान की स्वाधीनता के दूरगामी परिणामों पर विचार कर हमने सहयोग की रूपरेखा मन में बनाई तथा हिन्दुस्तान सरकार के नाम एक पत्र भेजने का निर्णय किया। मैंने लिखा हिन्दुस्तान को स्वतंत्र

राष्ट्रों की पंक्ति में बिठाना हमारा मुख्य ध्येय था और है। तथापि इस ध्येय की पूर्ति के लिए रक्तपात या स ास्त्र क्रान्ति के मार्ग को ही अपनाने की हमने दढ़ प्रतिज्ञा नहीं की है। इतना ही नहीं, यदि किसी अन्य उपाय से यह ध्येय सफल होने की सम्भावना रहती तो ाायद हम स ास्त्र प्रतिकार का मार्ग न अपनाते। इस युद्ध के माहौल में यदि सरकार दूरदर्ि ाता से काम लेकर विधान मण्डल में हिन्दुस्तान को औपनिवेि ाक स्वायत्तता देगी और केन्द्रीय विधान मण्डल में हिन्दुस्तानी प्रतिनिधियों को बहुमत प्रदान करेगी, तो हिन्दुस्तान के कल्याण के लिए हम और हमारे क्रान्तिकारी सहयोगी स ास्त्र प्रतिकार का मार्ग त्यागकर इस युद्ध में इंग्लैण्ड के पक्ष का समर्थन करने को तत्पर हो सकेंगे।

मैंने पत्र के अन्त में लिखा यदि यह सन्देह हो कि मैंने यह पत्र बंदीगह से छुटकारा पाने के लिए लिखा है और हम जेल से छूटने पर पुनः अ ाान्ति पैदा करेंगे, तो मेरा सुझाव है कि हमें न छोड़ते हुए सरकार अन्य निर्वासित बन्दियों को तत्काल मुक्त कर दे। उनकी मुक्ति में ही हम अपनी मुक्ति का सन्तोष कर लेंगे।"

मोतीलाल जैसे क्रान्तिकारियों ने अण्डमान कारागार की यातनाओं का विस्तत वर्णन लिखकर भेजा, जो समाचार पत्रों में छपा। जेल के नियमानुसार कैदी को वर्ष में एक पत्र ही घर वालों को लिखने की अनुमति थी। सावरकर ने बड़ी चतुराई से छोटे भाई नारायण सावरकर को लिखे पत्र में लिखा था कि किस प्रकार सरकार उन्हें राजनैतिक बन्दी मानने को तैयार नहीं होती, किस प्रकार संघर्ष करके उन्होंने सुविधाएँ पाईं। ये सब विवरण नारायण सावरकर ने दे ा के प्रमुख नेताओं और समाचार-पत्रों को भेजा। फ्रांस, जर्मनी तथा अन्य दे ाों के समाचार-पत्रों को भेजा। फ्रांस, जर्मनी तथा अन्य दे ाों के समाचार पत्रों में भी सावरकर के हवाले से अण्डमान के बन्दियों की दयनीय स्थिति पर लेख प्रकाि ात होने लगे। इससे दे ा में तमाम राजनैतिक बन्दियों की रिहाई के लिए आन्दोलन ाुरू हो गया।

सावरकर ने मि. मोन्टेग्यू को व्यक्तिगत पत्र लिखने की अनुमति माँगी। स्वीकृति मिलने पर उन्होंने पत्र में राजनैतिक बन्दियों, वि ोषकर क्रान्तिकारियों के उद्द यों, अपने तरीकों तथा प्रस्तावित सुधारों के बारे में अपने रवैये पर संक्षेप में

लिखा। हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय नेताओं को जानकरी देने हेतु अपने भाई को भेजे पत्र में सावरकर ने लिखा, मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महाराष्ट्र प्रान्तीय कांफ्रेंस ने प्रस्ताव पारित कर सरकार से तमाम राजनैतिक बन्दियों को मुक्त करने की माँग की है। वह दे ा भर के अन्य प्रान्तीय परिषदों की अपेक्षा कहीं अधिक निर्भीकता से तमाम राजनैतिक बन्दियों की रिहाई के लिए प्रयत्न ाील है। हम राजनैतिक बंदी अपनी मुक्ति के लिए किये जा रहे प्रयासों के प्रति आभारी हैं। संयुक्त प्रान्त तथा आन्ध्र प्रदे ा की परिषदों ने भी हमारे लिए इसी प्रकार के प्रस्ताव पारित किये हैं। मैं आ चर्य में हूँ कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को राजनैतिक बंदियों की मुक्ति के लिए प्रस्ताव पारित करने में ार्म या हिचकिचाहट क्यों है? राष्ट्रीय कांग्रेस ने गत वर्ष एक प्रस्ताव पारित किया था। किन्तु वह केवल युद्ध के दौरान बन्दी बनाये गए लोगों के बारे में था। हम जैसे राजबन्दी जो वर्षों से जेल में अमानवीय यातनाएँ सहन कर रहे हैं, उनके बारे में ये नेता लोग कुछ क्यों नहीं सोचते? भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सुसज्जित, भव्य व वातानुकूलित पण्डालों में बैठे इन नेताओं की आँखों से हमारे लिए, जो मातभूमि के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दर-दर की ठोकरें खाने के बाद, अपने घरों से हजारों मील दूर समुद्र के बीच में काले पानी की अन्धेरी कोठरियों में पड़े सड़ रहे हैं, आँसू की एक बूँद भी नहीं टपकती! लगता है कि कांग्रेस के नेता इस आ ांका के िाकार हैं कि यदि वे राजनैतिक बन्दियों, क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करेंगे तो सत्तासीन गोरे साहबों में उनकी छवि खराब हो जाएगी। राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से राजनैतिक बन्दियों की रिहाई का प्रस्ताव अव य पारित कराया जाना चाहिए।

वायसराय तथा मि. मोन्टेग्यू को भेजे अपने पत्र में मैंने स्पष्ट कर दिया कि इस आवेदन को भेजने का मेरा उद्दे य राजबन्दियों की मुक्ति का मार्ग प्र ास्त करना ही है। यदि किसी कारण से मुझे मुक्ति न मिले तब भी मैं अन्य सभी राजबन्दियों की मुक्ति से पूर्ण संतुष्ट रहूँगा। मैं स्वयं जेल में रहते हुए यदि अन्यों की मुक्ति का मार्ग प्र ास्त कर सका तो अपने को धन्य ही समझूँगा। मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि सरकार वास्तव में दायित्वपूर्ण ाासनाधिकार अर्थात् कम से कम केन्द्रीय विधान मण्डल में परिणामकारक बहुमत

दे, साथ ही राजबन्दियों और निर्वासित दे ाभक्तों की पूर्णमुक्ति की घोषणा कर दे, अमेरिका, फ्रांस तथा अन्य दे ाों में भटक रहे भारतीय दे ाभक्तों पर से आरोप-पत्र वापस ले ले, तो मुझ जैसे राजबन्दियों को इस नये घटनाक्रम का स्वागत करने में हिचक न होगी। यदि ाान्ति और संविधान का रास्ता खुला है तो कोई भी सच्चा राष्ट्रभक्त हिंसा, रक्तपात और अराजकता का मार्ग क्यों अपनायेगा? जब उसके दे ा की स्वाधीनता, अधिकारों तथा अन्य माँगों को अनसुना कर दिया जाएगा।, संविधान सम्मत तमाम रास्ते बन्द कर दिये जाएँगे, राष्ट्रभक्तों को हिंसा, रक्तपात तथा विद्रोह का मार्ग अपनाने को विव ा होना पड़ता है। इंग्लैण्ड और अमेरिका की तरह हमारे प्रत्येक दे ावासी को स्वायत्त अधिकार, प्रगति के अवसर तथा स्वाधीनता प्रदत्त की जाये तो स्वतः ही युवक हिंसा और अराजकता का मार्ग छोड़कर ाान्ति के मार्ग को अपना लेंगे। सन् 1998 के अगस्त महीने में मि. मोन्टेग्यू को भेजे गए ज्ञापन के उपरोक्त अं ाों को सावरकर ने अपने भाई को भेजे पत्र की असंख्य कापियाँ राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवे ान में प्रतिनिधियों के बीच बाँटीं। इस पत्र के अं ा अमतबाजार पत्रिका, दी बंगाली तथा अन्य अंग्रेजी और भाषाई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाि ात हुए। परिणामतः अण्डमान तथा अन्य स्थानों पर नजरबन्द राजनैतिक बन्दियों के प्रति जनता के मन में सहानुभूति की भावना पैदा होने लगी। पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ. एनी बेसेण्ट के तमाम सदस्यों को भी सावरकर ने इस पत्र की प्रतियाँ भेजीं। समाचार पत्रों में अण्डमान के बन्दियों के साथ किये जाने वाले क्रूर व्यवहार सम्बन्धी समाचारों ने दे ा में खलबली मचा दी। हिन्दुस्तान सरकार ने अण्डमान कारागार और बस्ती के सुधार के लिए निरीक्षण करने हेतु जेल कमी ान को भेजा। इस जाँच आयोग ने सावरकर से बातचीत कर तीन चार बन्दियों के प्रार्थना पत्र भी मँगवाए। सावरकर ने अपने आवेदन में जेल प्र ाासन में परिवर्तन का सुझाव देते हुए जो तर्क दिये थे उनसे तो जेल कमी ान के सदस्य प्रभावित हुए, किन्तु उनकी स्पष्टोक्ति कि यदि सुधार सफल होंगे तथा क्रांतिकारियों को उनसे समाधान होगा, तभी वे अपना पुराना रवैया छोड़कर ाान्ति के पथ को अपनाएँगे, उन्हें पसंद नहीं आई। इसी समय भारत में राजनैतिक बन्दियों की रिहाई की जोरदार माँग उठाई गई। बम्बई की ने ानल

यूनियन ने राजबन्दियों की रिहाई की माँग को लेकर 70 हजार लोगों के हस्ताक्षरों से युक्त एक ज्ञापन हिन्दुस्तान सरकार को भेजा। गाँव–गाँव और ाहर– ाहर में राजनैतिक बन्दियों और क्रान्तिकारियों के प्रति लोगों में सहानुभूति उमड़ी। महिलाएँ भी घरों से निकलकर घर–घर जाकर मुक्ति के ज्ञापन पर हस्ताक्षर कराने लगीं तथा पेम्पलेट बाँटने लगीं। एक वह भी समय था जब राजनैतिक बन्दी ाब्द को आतंक का प्रतीक माना जाता था। बड़े–बड़े राष्ट्रीय नेता भी क्रान्तिकारियों को पथभ्रष्ट व हत्यारे तक मानते थे। किन्तु अब समाज में उनके प्रति श्रद्धा और सहानुभूति पैदा हो चुकी थी। सावरकर ने ने ानल यूनियन के नेताओं को एक पत्र लिखकर उनके प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया।

इस ज्ञापन का प्रभाव पड़ा तथा कुछ ही दिन बाद सरकार ने घोषणा कर दी कि प्रत्येक राजबन्दी को राजक्षमा प्रदान कर मुक्त किया जाएगा। तार अण्डमान पहुँचा तो उसमें लिखा था–सार्वजनिक ाान्ति के समर्थक राजनैतिक बन्दी ही मुक्त होंगे। अतः स्पष्ट था कि सावरकर बन्धु तथा अन्य गरम विचारों के राजबन्दियों की मुक्ति सम्भव नहीं है। सरकार किसी भी अवस्था में सावरकर बन्धुओं के रिहा करने के लिए तैयार नहीं थी। दिल्ली की लेजिस्लेटिव कौंसिल में इनकी मुक्ति की माँग उठाई गईं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक में प्रस्ताव पारित कर सावरकर बन्धुओं तथा पंजाब के श्री बग्गा व श्री रतन चौधरी को अविलम्ब मुक्त किये जाने की प्रबल माँग उठाई गई। इसका परिणाम यह हुआ कि सावरकर को कोठरी से मुक्त कर जेल के आंगन तक आने की अनुमति मिली।

कारागार के दसवें वर्ष में सावरकर ने एक और आवेदन–पत्र लिखा कि दस वर्ष हो रहे हैं, मुझे कम से कम टिकट पर बाहर जाने की तथा स्वतन्त्रता से बैठने की तो अनुमति दी जाए।

उत्तर आया दस वर्षों में अभी कई दिन बाकी हैं, अतः नियमानुसार अनुमति नहीं दी जा सकती। दस वर्ष पार होने पर भी सावरकर को बाहर जाने की अनुमति नहीं दी गई। मार्च 1921 में के, वी. रंगास्वामी आयंगर ने कौंसिल में एक प्रस्ताव रखकर कौंसिल के गवर्नर जनरल से प्रार्थना की कि वे सावरकर के विषय पर विचार करें। इस प्रस्ताव पर बहुत

तर्क-वितर्क और वाद-विवाद हुआ। फिर भी दोनों भाइयों के वहाँ से स्थानान्तरण के आदे ा ही दिये गए, उन्हें मुक्त नहीं किया गया। हयात खाँ और नवाब सर बहराम खाँ ने इस प्रस्ताव का भी घोर विरोध करते हुए कहा कि 2 मई 1921 के दिन दोनों सावरकर बन्धुओं (विनायक सावरकर व गणे ा सावरकर) को भारत लाने के लिए महाराजा नामक जलपोत पर चढ़ाया गया।। 14 वर्ष बाद दोनों भाई पहली बार रात को एक साथ सोये थे। पाँच दिन बाद जलपोत कलकत्ता के तट पर पहुँचा। सावरकर बन्धुओं को तत्काल अलीपुर कारागार में ले जाया गया। जेल के फाटक के अन्दर घुसते ही दोनों भाइयों को अलग-अलग गली में मोड़ दिया गया। आठ दिन के बाद बड़े भाई गणे ा सावरकर को बीजापुर की जेल में भेज दिया गया और सावरकर को रत्नागिरि में। सावरकर भाई के स्वास्थ्य को लेकर बहुत चिन्तित थे। दूध मिलना बंद होने तथा अधकच्ची ज्वार की रोटियाँ खाने से सावरकर का स्वास्थ्य चौपट हो गया। अण्डमान में बड़े प्रयत्नों और हड़ताओं से प्राप्त लेखन, अध्ययन व श्रम से मुक्ति की सुविधाएँ छिन जाने से वे मरणासन्न अवस्था को पहुँच गये। पुनः निरा ा ने आक्रमण किया और आत्महत्या का विचार जगा, पर चिन्तन-मनन से विवेक जागत होकर नवजीवन मिला। कर्तव्य पथ पर डटे रहने की ाक्ति मिली। माझी जन्मठेप अर्थात् आजीवन कारावास लिखने की ुरुआत यहीं से हुई।

ज्येष्ठ बंधु की हालत चिन्ताजनक थी। नारायण सावरकर को पता चला, तो उन्होंने बाबाराव (गणे ा सावरकर) से मिलने की अनुमति माँगी। उन्हें इस ार्त पर अनुमति दी गई कि वह खादी की पो ाक की जगह दूसरे कपड़े पहनकर कारागार जाएँ। नारायण ने इस अपमानजनक ार्त को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने राज्यपाल के पास मामला पहुँचाया तब ार्त हटी। वे खादी के कपड़े पहने हुए ही ज्येष्ठ बन्धु से मिले। बाबाराव को बीजापुर कारागार की अन्धेरी सीलन युक्त तथा एकान्त कोठरी में रखा गया था। इसका उनके मस्तिष्क पर कुप्रभाव पड़ा। बन्धु ने देखा कि बाबा एक प्रकार से मरणासन्न हैं। माँग किये जाने पर उन्हें अहमदाबाद की कारागार में भेज दिया गया। वहाँ एकान्तवास से तो मुक्ति मिली, पर टी.बी. की समुचित चिकित्सा नहीं कराई गई। अन्त

में उनका ारीर पूरी तरह जवाब देता गया। सावरकर को आ ांका घेरे रहने लगी कि न जाने बाबा जीवित भी हैं, या नहीं। सितंबर 1922 में उन्हें कहीं से समाचार मिला कि बाबाराव सावरकर को कारामुक्त कर दिया गया है। यह सुनकर सावरकर को असीम प्रसन्नता हुई। पर जब पता चला कि उन्हें बेहो ाी की द ाा में मुक्त किया गया है तो उनके दुःख की सीमा नहीं रही। बेहो ाी की द ाा में बाबाराव को घर लाया गया था। सरकार ने ाायद उन्हें मत्यु के किनारे लगा जानकर अन्त्येष्टि का खर्च बचाने के लिए मुक्त किया होगा? यह मुक्ति न थी पुनर्जन्म था।

2 वर्ष बाद रत्नागिरी जेल से सावरकर को यरवदा कारागार में स्थानान्तरित कर दिया गया। उन्हें सबसे अलग रखा गया और अब भी उसी प्रकार की यातनाएँ दी जाती रहीं। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के बन्दी भी यरवदा जेल में थे। वे क्रान्तिकारी राष्ट्र योद्धा गुप्त षड्यन्त्री, हिंसक, हत्यारे, पापी तथा न जाने क्या-क्या समझे जाते थे। हिन्दू संगठन का कार्य भी इनकी दष्टि में राष्ट्र-घातक तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता में बाधक था। सावरकर ने तर्क देकर अहिंसा, हिन्दू मुस्लिम एकता, खिलाफत आदि विषयों पर उनकी विकृत धारणाओं का खण्डन किया। अधिकां ा गाँधीवादी युवक क्रान्तिकारियों के मार्ग को उपयुक्त मानने लगे। सावरकर के समय अण्डमान में सुपरिटेण्डेण्ट पद पर नियुक्त मेजर मुर्रे को पंजाबी विभाग का अध्यक्ष बनाकर यरवदा जेल में स्थानान्तरित कर दिया। वह उदार व सावरकर का परिचित था। उसने सावरकर को कोठरी से निकाल क्विनीन के बिक्री केन्द्र पर नियुक्त कर दिया तथा फैक्ट्री के कर्मचारियों को पढ़ाने की अनुमति दे दी। उसने एक दिन सावरकर से पूछा यदि आपको मुक्त कर दिया जाए तो क्या करोगे? सावरकर ने कहा जिस परिस्थिति में मुझे मुक्त किया जाएगा, उसी के अनुरूप आगे का निर्णय करूँगा। यदि राजनीति में भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगाया गया, तो समाज सेवा के क्षेत्र में रचनात्मक कार्य कर मातभूमि की सेवा करूँगा। यदि बिना ार्त मुक्त किया गया तो राजनीति में सक्रिय हो सकता हूँ।

क मीर के हिन्दुओं के दर्द को कौन सुनेगा?

–अवध कि ाोर

जनतन्त्र में जनमत की आवाज में इतनी ाक्ति होती है कि वह सड़क से ाुरू होकर संसद तक पहुँच जाती है साथ ही वह आवाज सत्ता परिवर्तन की द्योतक भी बन जाती है। पहाड़ जैसे पीड़ा के कई द ाकों को सहने के बाद जो आग क मीरी पण्डितों के सीने में सुलग रही है। उनकी आवाज प्रतिध्वनित होकर संसद तक पहुँचती है तो इसमें कोई ाक नहीं कि सत्ताधारियों को उनकी समस्याओं का समाधान करना होगा या फिर सिंहासन खाली करना होगा। पीड़ा एक दो द ाक की नहीं अपितु 1947 से लेकर आज तक की है। किसी नेता या सत्ताधारी पार्टी ने मीरपुर कोटली पी.ओ.के. गुलाम क मीर और क मीर घाटी के उजड़े लाखों हिन्दुओं के घावों पर मरहम लगाने का कार्य नहीं किया। उल्टे अल्पसंख्यक तुष्टीकरण और वोटबैंक की राजनीति के तहत मुसलमानों को खु ा करने के लिए अरबों–खरबों रुपया पानी की तरह घाटी में बहाना ाुरू किया। अलगाववादियों के साथ उदारतापूर्वक व्यवहार किया। समस्या को सुलझाने का प्रयास न कर उससे और भी समझौतावादी दष्टिकोण के अन्तर्गत उलझा दिया। घाटी में हिन्दू अल्पसंख्यक हैं। और गुर्जर, बकरवाल तथा राष्ट्रवादी मुसलमान भी हैं लेकिन सरकार ने उनके हितों की बात न कर अलगावादियों के तुष्टीकरण की बात कर एक तरफ अलगाववादियों के हौसले बुलंद कर रही है तो दूसरी तरफ संसद में कहती आई कि क मीर और गुलाम क मीर भारत का अभिन्न अंग हैं। उसे हम छोड़ नहीं सकते, जबकि सच्चाई तो यह है कि क मीर घाटी में केवल भारतीय के नाम पर भारत की सेना है, वहाँ राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर राष्ट्रभक्त अपमानित होते हैं। अलगाववादियों द्वारा पाकिस्तान का ध्वज फहराया जाता है। पाक जिन्दाबाद बोला जाता है साथ ही वहाँ के अलगाववादी नेता पूरे दे ा में घूमकर सेमिनार और बैठकें करते हैं। खुलेआम अलगाववाद पर भाषण देते हैं और पूछने पर सरकार कहती थी कि इन्हें किस कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार करें। अरुन्धति राय और गिलानी पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा भी नहीं चला जो खुलेआम अपने विचार से राष्ट्र में अलगाववाद को बढ़ावा दे रहे हैं। सत्ता के लिए सरकार दे ा का सौदा करने से भी बाज नहीं आ रही है राष्ट्रहित को सरकार अपने स्वार्थी हित में तिलाँजलि दे रही है। क मीर घाटी में गूजर, बकरवाल, सिक्ख, सनातनी और राष्ट्रवादी मुसलमान, सभी रहते हैं। चन्द अलगाववादी मुसलमान ही

आजादी की माँग करते हैं जो पाकपरस्त हैं।

जम्मू-क मीर के मुख्यतः तीन भाग हैं। जम्मू, लद्दाख और क मीर घाटी। क मीर घाटी से हर दृष्टि से जम्मू लद्दाख बड़ा है। लेकिन विधानसभा में क मीर घाटी की सीटें अधिक हैं इसलिए सरकार में बैठे लोग घाटी के समर्थन में हमे ा ही जम्मू और लद्दाख से भेदभाव करते हैं। विकास के नाम पर जो भी धन केन्द्र सरकार से प्राप्त होता है। वह घाटी में ही बँटकर रह जाता है। जम्मू और लद्दाख वाले मुँह ताकते रह जाते हैं, 1947, 1967, 1990 और 1991 में जो भी हिन्दू उजड़कर जम्मू के कैम्पों में तथा पूरे दे ा में आए आज भी सरकार उनके पुनर्वास की दि ा में प्रयास नहीं कर पा रही है। यहाँ तक कि उनको वोट देने का अधिकार भी नहीं है। फिर वे जाएँ तो कहाँ जाएँ? कौन उनकी सुनेगा? वर्षों से अब तक कितनी बार वेस्ट पाकिस्तानी रिफ्यूजी धरना प्रद र्ान कर चुके। संसद तक अपनी आवाज पहुँचा चुके लेकिन, सरकार आ वासन देकर रह जाती है। इनकी समस्या इतनी भयावह है कि इन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिल पाती। दाने-दाने को मोहताज ये इधर-उधर भटकते रहते हैं। अलगाववादी नेता घाटी के बच्चों और महिलाओं को मोहरा बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। वे उनका आह्वान करते हुए कहते हैं कि जब तक तुम पत्थर मारते रहोगे, पैसा मिलता रहेगा। घाटी में यह एक प्रकार का रोजगार बन गया है। अमरनाथ यात्रियों को प्र ाक्षित बच्चे मुँह चिढ़ाते हैं। उनके ऊपर पत्थर मारते हैं लेकिन रक्षा बल के जवान मात्र बाँस के डंडे पटक कर उन्हें डराते हैं। वे इन्हें मार नहीं सकते, उन्हें आदे ा नहीं है केवल उन्हें भगा सकते हैं। कारण यह है कि सुरक्षा बलों के हाथ बँधे हैं। 1971 के बाद घाटी में पाक प्रेरित आतंकवाद ाुरू हुआ, अब तक लगभग 80 हजार सुरक्षा बल के जवान और नागरिक मारे जा चुके हैं।

क यप ऋषि का क मीर जल रहा है। भारत का भाल क मीर रक्तरंजित हो रहा है और मानवता यहाँ चीत्कार रही है। हम हाथ पर हाथ रखे आखिर कब तक बैठे रहेंगे। **भारत के सत्ताधारी कब तक क मीरियों की आवाज को अनसुनी करते रहेंगे? आखिर कब तक समझौतावादी नजरिया अपनाते रहेंगे? विचारणीय प्र न तो यह है कि क्या सरकार को यह पता नहीं है कि अब तक क मीर में क्या हुआ या क्या हो रहा है या फिर क्या होना चाहिए? यह अकाट्य सत्य है कि सरकार को सब कुछ पता है या**

सरकार ने जो सेल गठित किया है उनमें सभी को सच्चाई का पता है लेकिन वे इस समस्या को लम्बा खींच रहे हैं। इसे सुलझाना नहीं चाहते। सुलझाने की बात है ाान्ति के नाम पर आतंक के सामने घुटने टेकने की बात करते हैं, ाान्ति के नाम पर आतंक के सामने हाथ जोड़े खड़े हैं। उन्हें यह पता नहीं कि आवाम की आवाज को दबाकर, क मीरी पंडितों की भावनाओं को कुचल कर ाान्ति स्थापित नहीं की जा सकती। **सरकार को यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि हिम्माच्छादित पर्वतमालाओं के भीतर ही प्रलयंकारी ज्वालाएँ भी धीरे-धीरे सुलग रही हैं।** देर-सबेर पूरा राष्ट्र क मीर की समस्याओं को हल करने हेतु तथा सही मायने में ाान्ति की स्थापना हेतु कमर कसकर तैयार खड़ा मिलेगा। आज राष्ट्रहित में आव यकता है कि सभी पार्टियों को दलगत भेदभाव भूलकर क मीर समस्या के समाधान में जुटने जाएँ। अगर ऐसा नहीं हुआ तो दे ा में बहुत बड़ा ज्वार खड़ा होगा। वर्तमान परिद य में क मीरी पण्डितों की जो हालत दृष्टिगोचर हो रही है, उससे सम्पूर्ण वि व परिचित है, उनके भी मन-मस्तिष्क में यह बात बैठ गई कि क मीर समस्या के समाधान में उनकी भी भागीदारी होनी चाहिए। वे भी यह चाहते हैं कि वे भले ही रोजी-रोटी की खोज में दे ा के किसी भी भाग में हों उन्हें वोट डालने का अधिकार हो। जम्मू-क मीर के चुनाव में वे भी हिस्सा लें उनकी भी भागीदारी सुनि चित हो। उनका सबसे बड़ा दर्द यही है कि सरकार चन्द विघटनकारी ाक्तियों के सामने घुटने टेक रही है। अलगाववादियों की हाँ में हाँ मिला रही है। उन्हें अपनी भूमि से बिछुड़ने का मलाल नहीं, उनमें भयंकर आक्रो ा है वे अब तक वहाँ की सरकारी सहायता से रोजगार के अवसर से वंचित भी तो हैं। उनकी तड़प है सब कुछ पाने की। जो उन पर अत्याचार और भेदभाव हो रहा है वे सब चुप रहकर सहन करने की स्थिति में नहीं हैं। जम्मू-क मीर पीपुल्स फोरम के नेतत्व में दे ा के कोने-कोने में जहाँ भी क मीरी पण्डित हैं वे अपनी आवाज पहुँचा रहे हैं। क मीरी पण्डितो! अब सजग हो जाओ ांखनाद हो चुका है। दे ा की सम्पूर्ण राष्ट्रवादी ाक्तियाँ तुम्हारे साथ खड़ी हैं। अपना हक लेकर ही दम लो। उठो! क मीर की वैदिक वादियाँ तुम्हें बुला रही हैं केसर की सुगन्ध तुम्हें आकर्षित कर रही हैं। इस नंदन कानन को, भारत के भाल को बचा लो। इस पुनीत कार्य में आड़े आने वाली ाक्तियों को मुँहतोड़ जबाव दो।

रानी लक्ष्मीबाई की चिरविदाई

–परमे वर प्रसाद सिंह

17 जून 1858

जनरल रोज़ ने ब्रिगेडियर स्मिथ को ग्वालियर के पूर्वी क्षेत्र पर आक्रमण करने का आदे ा दिया। स्मिथ ने लड़ाई का बिगुल बजाया। लड़ाई प्रारंभ हो गई। स्मिथ की सेना आगे बढ़ने लगी। लक्ष्मीबाई ने गोलन्दाजों को चुप रहने का संकेत किया। गोरी पल्टन बढ़ती रही, बढ़ती रही, और उन्हें और अधिक बढ़ने का मौका दिया गया। स्मिथ का मंसूबा बढ़ा। उसे पूर्ण वि वास हो गया कि आज ही ाहर पर कब्जा कर लिया जाएगा। गोरी पल्टन 'हुर्रा' करती हुई प्रचंड वेग से आगे बढ़ी।

टोरिया के पीछे एक तोपखाना लगा था। तोपखाने से गोलों की वर्षा करने के लिए जूही वहाँ पर मौजूद थी। रानी ने आज्ञा दी – 'मुहरे को थोड़ा ढीला करो और धाँय–धाँय गोले छूटने लगे। गोरे सवार धरती पर बिछ गए। पैदल पल्टन भी भारी संख्या में मारी गई। सवारों का दूसरा दल आया। समाप्त! फिर तीसरा दल आया, वह भी समाप्त। इस प्रकार दल–पर दल आते रहे और धीरे–धीरे धरती पर बिछते गए। तभी पल्टनों का एक बहुत बड़ा हुजूम आया। लाल कुर्ते वाले घुड़सवार पीछे हटे, लेकिन पंचसेनापतियों की सत्प्रेरणा ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए बाध्य किया। फिर घमासान युद्ध। सबसे आगे महारानी स्वयं, और उनके पीछे समस्त सैनिक। सिर्फ रानी की लपलपाती तलवार से ही सैकड़ों गोरे सैनिक मारे गए। पल–भर में ही गोरी पल्टनों ने मैदान खाली कर दिया। स्मिथ को काला मुँह लेकर लौटना पड़ा।

18 जून 1858 ज्येष्ठ ाुक्ला सप्तमी (ाुक्रवार) सुबह की पूजा–अर्चना समाप्त करने के बाद हठात् महारानी लक्ष्मीबाई को गीता की दो–चार पंक्तियाँ स्मरण हो आती हैं–

'संकल्पप्रभवान्कामाँस्त्यक्त्वा सर्वान ेषतः।
मनसैवद्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।।
ानैः ानैरूपरमेद्बुद्धया धतिगहीतया।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत्।।'

अर्थात् मनुष्य को चाहिए, कि संकल्प से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण कामनाओं को वासना और असक्ति सहित त्यागकर और मन के द्वारा इन्द्रियों के समुदाय को सब ओर से अच्छी

प्रकार व ा में करके, मन-क्रम से अभ्यास करता हुआ, उपरामता को प्राप्त होने तथा धैर्य युक्त बुद्धि द्वारा मन को परमात्मा में स्थिर करके, परमात्मा के सिवाय और कुछ भी चिन्तन न करे।

महारानी को ई वर की इस असीम कृपा से अत्यन्त ाान्ति मिली। अतीव हर्ष के साथ उन्होंने अपने पंच सरदारों को बुलाया और मुस्कुराते हुए अन्तिम निवेदन प्रस्तुत किया-आज मैं अन्तिम युद्ध लड़ने जा रही हूँ। तुम लोग भी धैर्य और साहस से काम लेना। मैंने तात्याटोपे और राव साहब को बहुत समझाया है- संकट का समय आते ही सिन्धिया की सेना हम से फूट जाएगी और अधिक सम्भव है, गोरी पल्टन में ाामिल होकर वह पे ावाई सेना पर ही गोले-बारूद की वर्षा करे। तुम लोग सिन्धिया की सेना से हो ियार रहना। अपने लाल कुर्ती वाले सवारों को अपने व ा में रखना। मुझे आ ाा है, वे लोग युद्ध के मैदान में भी अनु ाासन का पालन करेंगे और रामचन्द्र दे ामुख की ओर घूमकर उन्होंने आदे ा दिया- 'दामोदर को आज तुम पीठ पर बाँधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह दक्षिण सुरक्षित पहुँचा देना। तुमको आज मेरे प्राणों से बढ़कर अपनी रक्षा की चिन्ता करनी होगी। दूसरी बात यह है कि मारी जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को न छूने पायें। बस! घोड़ा लाओ।'

गोले बरसने लगे थे। प्रथम दिन की हार के कारण-अंग्रेज जनरल आज बहुत अधिक सावधान थे। रोज़ ने आज अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। आज ग्वालियर पर चारों तरफ से आक्रमण किया गया किन्तु पूरब की ओर सबसे अधिक तैयारी थी।

युद्ध आरम्भ हो गया। बन्दूकों की मार ने हाहाकार मचा दिया। रानी के रणकौ ाल को देखकर अंग्रेज जनरल काँप उठे।

जूही की तोपें भी गजब ढा रही थीं। न जाने कितने गोरे सवार आए और मरते रहे, फिर आए और फिर मरे। तभी एकाएक तोपों पर गोलों की वर्षा हुई। तोपों के मुँह बन्द हो गए। जूही को तलवार लेकर युद्ध करना पड़ा। किन्तु लड़ते-लड़ते वह वीरांगना भी मारी गई।

रानी को मालूम हुआ-ग्वालियर सेना एवं सेनापति अंग्रेजों के

साथ मिल गए। राव साहब अपने मोर्चे को छोड़कर धीरे-धीरे पीछे हट रहे हैं, तात्याटोपे का भी यही हाल है, नवाब साहब भी पीछे की ओर देख रहे हैं।' रानी को बोध हुआ-तात्या और राव की विलासिता ने सबको नष्ट कर दिया, किन्तु तत्क्षण उन्होंने क्रोधावे ा पर नियन्त्रण किया और उनकी भूलों को आ ाीर्वाद देकर आगे बढ़ीं। रानी के सवारों के पीछे पे ावाई पैदल सेना थी। राव साहब की हार का समाचार सुनकर पे ावाई सेना पीछे हटने लगी। रानी ने मुड़कर देखा- 'सभी गीदड़ की तरह भागे जा रहे हैं।' आवाज़ लगाई- 'वीरो! लौटो! जवानो लोटो! भारत के नौजवानों।' लेकिन कौन लौटता है। सब के सब भागते गए, किन्तु आसानी से भाग नहीं पाए। गोरी पल्टन ने उनका पीछा किया। अधिसंख्य बेमौत मारे गए। जो बचे, इधर-उधर भाग गए।

रानी की छोटी-सी टुकड़ी हजारों गोरी पल्टनों के द्वारा घेर ली गई। आगे-आगे रानी, बगल में मुन्दर। रामचन्द्र दे ामुख मुन्दर के बगल में और रघुनाथ सिंह रानी के बगल में। गुलाम मुहम्मद रानी के पीछे और उसके पीछे लाल कुर्ती सवार। सभी ौर्य के साथ दु मनों को अपनी तलवारों से कतरते जा रहे थे।

सोनरेखा नाला निकट आ गया। लाल कुर्ती का अन्तिम सवार वीर गति को प्राप्त हुआ। गोरी पल्टन असाध्य। रामचन्द्र राव की पीठ पर दामोदर! 'दी क्वीन कैन नॉट बी सेव्ड नाउ (रानी अब बच नहीं सकती)' गोरी पल्टन की ओर से आवाज आयी। रानी ने सुना। वाह री वीरांगना। तुम जैसी नारी ही तो भारत की धरती का ंगार है। द ान न हुए। भाग्यहीन हूँ। किन्तु तुम्हारी कीर्ति की कहानी सुनकर पुनः-पुनः भारत माता की गोद में जन्म लेने की आ ा करता हूँ। कभी तुम्हारे द ान अव य होंगे। दाँतों में घोड़े की लगाम। दोनों हाथों में लपलपाती तलवारें। कचाकच दु मनों की गर्दनें धड़ से अलग होती जा रही हैं। मुख से आवाज निकलती है- "नैनं छिन्दन्ति ास्त्राणि' रघुनाथ सिंह गा रहा है- 'जननी जन्म दियो है तोखो' 'मुन्दर के सीने में गोला लगा। वह 'हर हर महादेव' और 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' का उद्घोष करती हुई उत्सर्ग हुई। तभी एक संगीन-बरदार की हूल रानी के सीने के नीचे पड़ी; किन्तु संगीन बरदार भी रानी की तलवार का िाकार हुआ।

बाईं जाँघ में एक गोला लगा। खून!! रानी ने मुस्कराकर कहा – 'नींव की ईंट!' फिर युद्ध! लपक–लपक कर घायल रानी अपनी चमचमाती तलवार से गोरी पल्टनों को धरा ाायी करती जा रही थी।

सोनरेखा नाला आ गया था। घोड़े ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। रानी को सोचना पड़ा– 'यदि मेरा अपना तेजस्वी घोड़ा होता तो गोरी पल्टनों को और अधिक कतरती, लेकिन यह तो सिन्धिया राज़ का प्यारा घोड़ा है। अस्तबल को पहचानने वाला घोड़ा रणक्षेत्र का कौ ाल क्या जानेगा।' गुलमुहम्मद, रामचन्द्र दे ामुख और रघुनाथ सिंह अपनी–अपनी तलवार की अन्तिम करामात दिखला रहे थे। तभी झटके से आकर एक अंग्रेज सवार ने अपनी तलवार से महारानी के सिर पर वार किया। सिर पर दाईं ओर का हिस्सा कट गया और दाईं आँख बाहर निकल पड़ी। आ चर्य! तब भी रानी ने उस घातक पर अपनी तलवार चलाई, और उसके दो टुकड़े कर दिये। आँखों से महारानी ने स्वयं उसे देखा।

बची–खुची गोरी पलटन भय से थर्रा गई। रामचन्द्र, गुल मुहम्मद और रघुनाथसिंह ने उनका पीछा किया। किन्तु जनरल रोज़ की छावनी तक ये लोग उनको नहीं खदेड़ सके, क्योंकि महारानी लक्ष्मीबाई और मुन्दर के ाब का संस्कार करना था। सोनरेखा नाला के निकट ही बाबा गंगादास की पर्णकुटी थी। अतः महारानी एवं मुंदर के पवित्र ारीर को, गुल मुहम्मद, रामचन्द्र दे ामुख एवं रघुनाथ सिंह जैसे महान दे ाभक्तों ने उसी पर्णकुटी के प्रांगण में ले जाकर रखा। बाबा गंगादास ने महारानी के पवित्र ारीर को गंगाजल से अभिसिंचित किया। कहते हैं, गंगाजल का स्प र्ा पाते ही महारानी को कुछ चेतना आयी। उन्होंने मुख के संकेत से गंगाजल की याचना की! बाबा गंगादास ने महारानी को अन्तिम बार गंगाजल पिलाया और तभी उस दुर्गा, काली, लक्ष्मी और महामाया की महान आत्मा की अन्तिम वाणी निःसत हुई– **'हर–हर महादेव! ओ३म्'!**

पर्णकुटी की लकड़ी से महारानी का दाह संस्कार सम्पन्न हुआ। रानी के बगल में ही मुन्दर भी चिरनिद्रा में सो गई। रामचन्द्र दे ामुख दामोदर राव को लेकर दक्षिण की ओर चले गए। रघुनाथ सिंह ने पुनः लौटकर अंग्रेजों से युद्ध किया और

लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ। गुलाम मुहम्मद बाबा गंगादास का िष्य बन गया। कहते हैं, वह तब तक उस पर्णकुटी के प्रांगण में डेरा डालकर बैठा रहा, जब तक महारानी की ाावत समाधि के इर्द-गिर्द हरी-हरी घास नहीं उग आई।

गुल मुहम्मद ने बाबा गंगादास को आदि से अन्त तक महारानी के पराक्रम की कथा सुनाई। सुनते-सुनते बाबा को समाधि लग गई। ऐसा महसूस हुआ, मानों महारानी लक्ष्मीबाई की आत्मा से आवाज़ आ रही है-

मुक्ति के बाद भी संघर्ष होगा- ोषित की आत्मा की मुक्ति के लिए, पीड़ितों की आत्मा की मुक्ति के लिए। जब राष्ट्रीय पुरुष के हृदय में राव साहब की तरह अनु ाासनहीनता एवं विलासिता का बीजारोपण होगा, जब राष्ट्रीय नारी के हृदय में रानी की लड़ाई की तरह राष्ट्रीय संस्कृति की निर्मम हत्या की भावना का अभ्युदय होगा, तब फिर संघर्ष होगा, और तब तक होता रहेगा, जब तक भारत के चप्पे-चप्पे में भारत की गौरवमयी संस्कृति फिर से प्रतिष्ठित नहीं हो जाती।' भगवान श्रीकृष्ण की वाणी असत्य कैसे होगी-

'परित्राणाय साधूनां विना ााय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।'

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का ना ा करने के लिए तथा धर्म की स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ और इसीलिए, एक और निवेदन है-

'दे ा धर्म, जन-जन की माता;
अथिर तिमिर-उर-र्रि म-पुंज!
है रोता तेरा दे ा बता-
होगा अब कैसे तिमिर हरण?

झाँसी की रानी से साभार

इस्लाम और जिहाद सिक्के के दो पहलू

–दत्तात्रय तिवारी

वि व के सर्वाधिक ाक्ति ाली राष्ट्र अमेरिका का गर्व खर्व करते हुए 11 सितम्बर 2001 को न्यूयार्क में की गई विध्वंसक कार्रवाई से जिसमें हजारों जानें गईं तथा अरबों–खरबों की सम्पत्ति धूल में मिल गई, आतंकवाद का एक नया घिनौना रूप प्रकट हो गया। इससे अमेरिका का वि ोषरूप से तथा अन्य सभी लोकतांत्रिक एवं मानव की गरिमा और स्वतंत्रता के समर्थक दे ाों का तिलमिलाना स्वाभाविक ही था। अमरिका ने इस घटना के तत्काल बाद आतंकवाद के विरुद्ध 21वीं सदी का प्रथम महायुद्ध छेड़ने और अन्तिम विजय प्राप्त करने तक इसे जारी रखने की घोषणा कर दी।

इस आतंकवाद का दूसरा सही नाम जिहाद है, प्रारंभ करने वाले कौन हैं यह जग जाहिर है। अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बु ा ने अपनी घोषणा में क्रूसेड (इस्लाम के विरुद्ध धर्म युद्ध) ाब्द का प्रयोग किया था। तब यह आम धारणा बन गई थी कि अब दो विचारधाराओं का, अलग अलग धर्म मानने वाली दो संस्कृतियों का, दूसरे ाब्दों में इस्लामी और गैर–इस्लामी दे ाों का युद्ध प्रारंभ हो गया है।

परन्तु दो दिन बाद जार्ज बु ा ने आतंकवाद को परिभाषित करते हुए अपना क्रूसेड ाब्द वापिस ले लिया और कहा कि हमारा युद्ध किसी धर्म–इस्लाम के विरुद्ध न होकर वि ाुद्ध आतंकवाद के विरुद्ध है। यही बात भारत के प्रधानमंत्री श्री बाजपेयी ने, विदे ामंत्री जसवन्त सिंह ने और अपनी जनता को आ वस्त करते हुए पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल परवेज ने भी कही।

इस स्पष्टीकरण और इन घोषणाओं के बाद भी यदि आतंकवाद के उत्पाद, निर्यातक और प्रसारक तालिबान सरकार एवं अनेक मुस्लिम राष्ट्र अपने जिहाद को जारी रखने के लिए मर–मिटने की बात करते हैं और स्वयं इस आतंकवाद को इस्लाम के साथ जोड़ते हैं तब इस्लाम और आतंकवाद को अलग करके कैसे देखा जा सकता है?

तालिबानी नेता मुल्ला उमर ने ओसामा बिन लादेन जिसका

गुरू था, यह घोषणा कर दी कि इस्लाम और अफगानिस्तान के विरुद्ध किया गया हमला मुस्लिम दे ाों के विरुद्ध हमला समझा जाएगा और वह इसके विरुद्ध जिहाद छेड़ देंगे। लेबनान, इण्डोनेि ाया, पाकिस्तान, बंग्लादे ा, सूडान, ईराक आदि दे ाों ने जहाँ न्यूयार्क में हुए विध्वंस पर खुि ायाँ मनाईं, वहीं अमरीका के विरुद्ध भी बड़े पैमाने पर विरोध प्रद र्न किए गए। बु ा के पुतले जलाए गए। भारत में भी मुसलमानों ने घोषणा कर दी कि तालिबान पर अमेरिकी हमले को मुस्लिम दे ाों के विरुद्ध हमला समझा जायेगा तथा अमेरिका को इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा। भारत के अन्य मुस्लिम नेताओं ने भी बु ा की घोषणा का विरोध करते हुए कहा था कि वह ऐसा करने से पूर्व ओसामा बिन लादेन अपराधी हैं इसका सबूत दे। इन सब बातों से क्या यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि सम्पूर्ण मुस्लिम जगत् परोक्ष या अपरोक्षरूप से आतंकवाद को समर्थन दे रहा है। ऐसी स्थिति में इस्लाम और आतंकवाद को अलग करके कैसे देखा जा सकता है?

मुस्लिम दे ा एक हैं

मुस्लिम दे ा आपस में चाहे लड़ें, पर वे यह सहन नहीं करते कि कोई गैर-मुस्लिम दे ा किसी मुस्लिम दे ा पर आक्रमण करे। इराक और ईरान, कुवैत और इराक के युद्ध आपसी थे पर ईराक पर अमरीकी हमले के विरुद्ध इस्लामी दे ा एक हो गए। क मीर में आतंकवाद के प्र न पर तथा क मीरी जनता को स्वतंत्रता देने की बात पर 'मुस्लिम दे ाों के संगठन ने प्रस्ताव पास कर पाकिस्तान का समर्थन किया। अब स्थिति यह है कि अमरीका, भारत तथा अन्य लोकतान्त्रिक दे ा इस्लाम को अलग करके आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई करना चाहते हैं, वहाँ इस्लामी दे ा स्वयं ही आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ने में अव्वल दिखाई देते हैं।

इस्लाम का जन्म

इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम का जन्म ही युद्धों और रक्तपात और तोड़फोड़ के साथ हुआ था। इस बात को स्वयं मुस्लिम इतिहासकारों ने लिखा है। इस समय वि व में चार प्रमुख धर्म हैं- हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाइयत और

इस्लाम। हिन्दू धर्म के प्रस्तोता वनों में रहने वाले त्यागी, मनीषी थे। उन्होंने कभी किसी सेना का आश्रय नहीं लिया। बुद्ध राजपुत्र होने पर भी संन्यासी बन गए और अपने धर्म का पैदल घूम-घूम कर प्रचार किया। ईसा भी निर्धन और साधु था। उसने भी कोई लड़ाई नहीं लड़ी। परन्तु इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद को अपने विचारों को दूसरों पर लादने के लिए युद्धों का सहारा लेना पड़ा। पैगम्बर मुहम्मद को छोटी-बड़ी 28 लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। उन्होंने जब निर्णायक लड़ाई में विजय प्राप्त कर मक्का में प्रवे ा किया तब विजय गर्व में वहाँ पर मूर्तिपूजकों की सभी मूर्तियाँ स्वयं अपने हाथ से तोड़ीं, अपने साथी कुरै ायों से भी उन्होंने ऐसा ही करने को कहा। इस प्रकार इस्लाम के पैगम्बर ने, अल्लाह के संदे ावाहक ने स्वयं मूर्तियाँ तोड़ने की, अपने मत का युद्ध द्वारा प्रचार करने की परम्परा को प्रारम्भ किया। इसका क्या यह अर्थ निकालना गलत होगा कि इस्लाम और युद्ध, इस्लाम और जिहाद, इस्लाम और विध्वंस सहजात हैं, एक दूसरे के यमल (जुड़वा) सहोदर हैं। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

बामियान की वि व सम्पदा दो बुद्धों के विध्वंस और न्यूयार्क की गगनचुम्बी मीनारों के विना ा को भारत के बहुचर्चित मुस्लिम नेताओं सैयद ाहाबुद्दीन, डॉ. जकारिया, असगर अली इंजीनियर, नूरानी, मु ाीरूल हुसैन आदि ने गैर इस्लामी बताया है। पर जब स्वयं पैगम्बर प्रथम बुर्ताकन है तो ये कार्य गैर-इस्लामी कैसे हो सकते हैं? यदि ये गैर-इस्लामी कार्य हैं तो किसी मुल्ला, मौलवी ने इनके विरुद्ध कोई फरमान या फतवे जारी क्यों नहीं किए?

इस्लाम नहीं चाहता कि इस्लाम के सिवाय वि व में किसी अन्य धर्म या विचारों का अस्तित्व रहे। पैगम्बर के बाद खलीफाओं ने इस्लाम की इस 'तलवार संस्कृति' को पूरी निष्ठा एवं भयंकरता से अपनाया। विजित दे ाों को उन्होंने न केवल अपने धर्म में ाामिल किया, अपितु उनके इतिहास और उनकी संस्कृति को भी नष्ट कर दिया। 200 वर्षों की अवधि में ही एक वि ाल भूभाग इस्लाम के जबड़ों में पिस

गया। सूर्योपासक मिस्र की संस्कृति सदा के लिए समाप्त हो गई। यही हाल मैसोपोटामिया (ईराक) सुमेरिया, बैबीलोनियाँ और असीरियाई संस्कृतियों का हुआ। ये सब इस्लाम के सर्वग्रासी उदर में समा गईं। इस्लाम के इस अंधड़ तूफान में वेदों के बाद वि व का प्राचीनतम अग्निपूजक पारसियों का धर्म भी नाम ोष रह गया। अब इन प्राचीन संस्कृतियों का नामलेवा भी कोई नहीं बचा। केवल वही पारसी बच गए हैं जो इस्लाम ग्रहण न कर भारत आ गए। वर्तमान अफगानिस्तान क्षेत्र उद्यान कहलाता था तथा जहाँ पर कभी भारत का गन्धार प्रदे ा था, तथा जहाँ पर कभी बौद्ध धर्म का बोलबाला था, आज वह तालिबानों, इस्लामी जिहादियों का गढ़ बन गया है।

कथनी और करनी

जब भी कहीं जिहादी तोड़फोड़ करते हैं, निर्दोष लोगों से उनका धर्म पूछ कर चुन-चुन कर मारते हैं, जब मुस्लिम स्कालर यह कह कर लीपापोती करते हैं कि यह कृत्य गैर-इस्लामी है, कुरान इसकी अनुमति नहीं देता। पर कुरान की 24 आयतें इन सब बातों को करने का निर्दे ा देती हैं। यह मान भी लें कि इस्लाम भाईचारे का उपदे ा देता है पर उसके अनुयायी क्या करते हैं। किसी धर्म को उसके उपदे ाों से नहीं, अपितु उसके अनुयायियों के कार्यों और व्यवहार से परखा जाता है। वास्तविकता तो यह है कि कुरान में भाईचारे की बात केवल उनके लिए है जो पैगम्बर में ईमान रखते हैं, पर इधर लोगों के लिए जो कुछ कहा गया है जिहादी उन बातों पर ही बड़ी निष्ठा से अमल करते हैं। ब्रिटेन के एक पूर्व प्रधानमंत्री ग्लेडस्टन ने कहा था : "यदि कुरान पर पाबन्दी लगा दी जाए तो वि व में ाान्ति की लहर फैल जाएगी।"

भारत विध्वंस का साक्षी

अन्य दे ा जो इस्लामी रंग में रंग गए वहाँ पर हुए इस्लामी रक्तपात का अब कोई साक्षी नहीं है, परंतु भारत जिसने इसका प्रतिरोध किया, इस्लाम के क्रूर कृत्यों का साक्षी है। 1992 में बाबरी ढाँचे के ध्वंस के बाद जो कभी मंदिर था, कांग्रेसियों, वामपंथियों और मुसलमानों ने बड़ी हाय तोबा मचाई। नरसिंहराव के नेतत्व में संसद ने इसे काला दिन बता

कर अपने मुख पर कालिख पोत ली। पर किसी को यह भी याद नहीं रहता कि आज भी कुतुब के पास स्थित कुव्वते इस्लाम मस्जिद के दरवाजे पर यह खुदा है कि "इस मस्जिद को 27 हिन्दू और जैन मन्दिरों को तोड़ कर बनाया गया है।" हिन्दू ही हैं जिनके ारीर में खून की जगह पानी है जो इसे देख कर भी मुँह फेर लेते हैं। खून होता तो खौलता भी। मुहम्मद इब्न कासिम, सुबुक्तगीन, महमूद गजनवी, ाहबुद्दीन गोरी, मुहम्मद बिन बख्तियार, खिलजी, बाबर आदि तुर्कों, अरबों और मुगलों ने भारत में जो आक्रमण किए उनके दो उद्दे य थे

1. लूटपाट 2. इस्लाम का प्रचार। अरबों का नेतत्व खलीफा कर रहे थे इन आक्रान्ताओं के हमलों का विवरण मुस्लिम इतिहासकारों ने जो दिया है वह रोंगटे खड़े करने वाला है। कत्लेआम करना, लोगों को गुलाम बनाना, स्त्रियों की इज्जत लूटना, उन्हें खुलेआम बाजारों में बेचना, मन्दिरों, देवालयों को ध्वस्त करना आदि बातें बड़े विस्तार से लिखी गई हैं। बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की। सामान्यतः उदार समझे जाने वाले अकबर ने नागरकोट की लड़ाई में जो कुछ किया, उससे उसने अपने दादा बाबर को भी कहीं पीछे छोड़ दिया। उसके सैनिकों ने वहाँ के मुख्य मन्दिर पर 200 गायों को मार कर उनके खून अपने जूतों में भर कर मन्दिरों की दीवारों पर उलीच दिए। ये सब मुस्लिम लेखकों ने लिखते हुए इसे अल्लाह का करम बताया है और बड़ा गर्व अनुभव किया है। इन बाद ाहों ने जहाँ हजारों लोगों को मुसलमान बनाया वहाँ हजारों मन्दिरों को नष्ट कर दिया या उन्हें मस्जिदों में बदल दिया। ये सब काम इस्लाम के नाम पर किए गए। फिर यह कहना कि इस्लाम इनकी अनुमति नहीं देता सीमातीत छल-कपट है।

पाकिस्तान का सच

पाकिस्तान का निर्माण इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम किस प्रकार काफिरों के साथ नहीं रह सकता। धर्म परिवर्तन करके मुसलमान बने भारत के 95 प्रति ात मुसलमानों ने अपनी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीयता अलग बता कर पाकिस्तान को

प्राप्त कर लिया। हजारों मारे गए और लाखों गहविहीन हो गए। इस्लाम के नाम पर ऐसा रक्तपात अभूतपूर्व था। मुसलमानों ने भारत के एक बहुत बड़े भाग को दारुल इस्लाम बना लिया। अब ोष भारत जो दारुल हरब है उसे भी काट कर एक नए पाकिस्तान की तैयारी है। असम में इसकी भूमि भी तैयार है।

वि वव्यापी विस्तार

इस्लामी आतंकवाद की कोई क्षेत्रीय सीमा नहीं है, यह वि वव्यापी है। ओसामा बिन लादेन के 40 दे ाों में अड्डे थे जहाँ हजारों आतंकवादी जिहाद के लिए तैयार हैं। ऐसे अन्य इस्लामी संगठनों की भी भारी भरकम संख्या है। अकेले क मीर में ही 6 आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं। भारत के अन्य राज्यों में भी इनके जाल फैले हुए हैं। चूंकि उनका लक्ष्य सारी दुनियाँ को इस्लामी रंग में रंगना है अतः उनका कार्यक्षेत्र सारी दुनियाँ है। भारत के किसी भी मुस्लिम नेता ने क मीर में जारी आतंकवाद का विरोध नहीं किया। फारूख अब्दुल्ला इसका विरोध इसलिए नहीं कर रहे थे क्योंकि उन्हें अपनी गद्दी छिनने का खतरा था। इसके बाद भी यह कहना कि इस्लाम को आतंकवाद से अलग रखना चाहिए, समझ से बाहर है।

समस्या का समाधान

यह सत्य है कि सभी मुसलमान आतंकवादी–जिहादी सैनिक नहीं हैं, पर प्रायः हर मुसलमान धार्मिक आदे ा के रूप में जिहाद का समर्थक है। यदि कुछ समर्थन नहीं करते हैं तो उसका विरोध भी नहीं करते। यदि मुट्ठी भर लोग विरोध भी करते हैं तो किन्तु–परन्तु के साथ। विरोध करते हुए फिलस्तीन में अमेरीका पर तथा क मीर में भारत पर आरोप लगाना उनके लिए अनिवार्य है।

समस्या का समाधान यही है कि इस्लाम की इस मानसिकता को जो ईसाइयत से भी जुड़ गई है कि उनका धर्म ही परम और अन्तिम सत्य है, समाप्त किया जाये। इस्लाम की यह मानसिकता कि वह श्रेष्ठतम है, आतंकवाद का, जिहाद का मूल प्रेरणास्रोत है।

टी.8, ग्रीनपार्क एक्सटें ान, नई दिल्ली–16

MAHABHARATA

An Epic - A Poet's Fancy or a Historical Reality

-N.K. Chowdhary

"Armies that have guided Missiles and Rockets do not move on Horse driven chariots" Makes sense.

"Kurukshetra and Hastinapur are still on the geographical map. That is certain.

Both arguments seem valid prima facie.

So where does the truth lie.

Is the epic Mahabharata just Ved Vyasa's poetic fancy or Mahabharata is a historical reality? Are there any archeological evidences to support the existence reality? Are there any archeological evidences to support the existence of palaces in the kingdom of Kuru?

Where does Truth lie in these two contradictory versions?

The hardliners argue that matters of faith cannot be and should not be evaluated on the strength of logic or reasoning.

The rationalists say why not?

The idea behind this article is to strengthen the teaching contained in the Epic, specially the part Bhagwat Geeta by presenting evidence that Mahabharata did happen and its not just fiction all the way.

Let us go back to the real nature of Tride as started in the Rigveda.

"There is only one Truth but the wise men interpret it differently."

It is not unusual that a number of additions get mixed up with original texts over the centuries. These additiona often give strength to the central idea of the text. In some cases these are used by people with vested interests to make adverse comments. Let us examine. Mahabharata on these parameters. We start from the basic fact that the original poem Jaya had just 8800 verses. In the next phase it became Bharata with 24,000 slokas. Finally there was the Mahabharata with 100,000 stanzas. It is not known what the length of the poem was before Jaya came to light. It could have started with an even smaller number.

We all know of Ramayana as an epic that now have more than one version. In some cases the additions made to the

original text have materially changed the character of the classic work... While most events have been retained, their perspective have been given strange and in some cases unique interpretations. Let us examine the events that find mention in the Mahabharta and are corroborated by archaelogical and historical evidences.

Places (like Kurukshetra or Hastinapur) find mention in the text of Mahabharata. Besides these, there are many more sites that are associated with the epic only by local tradition.

The Archaeological Survey of India carried out excavations at around forty such sites. Deep excavations revealed that around 1000 B.C all these sites shared a common material culture. The one discovery common to all these excavated sites was that of Painted Grey Ware.

Specimens of Painted Grey Ware can be seen at the National Museaum on Janpath in New Delhi. The pottery is simple yet superb. It is almost translucent being almost as thin as an egg shell. The bowls are elliptical in shape and have abstract patterns covering their surface.

This evidence however does not conclusively establish the historical accuracy of Mahabharata. It does however establish that at one time all these sites did have a common materialitic culture. The evidence is just circumstantial but there is further supporting evidence that needs to be taken into account.

It is mentioned in Mahabharata that many generations after the battle at Kurukshetra, Hastinapur was abandoned having been flooded by Ganga. The people of Hastinapur migrated to Kausambi.

This narrative is supported by archaelogical evidence. Excavation at Hastinapur yeilded a lot of Painted Grey Ware on one side of the mound.

However nothing was found on the side facing the river. The one explanation for this could be that half the site was swept away in the Ganga flood. The site that had escaped the fury of the floods alone had some surviving Painted Grey Ware remains.

Remains of habitation material were also found in the ancient bed of the Ganga at that site during excavations by the Ar

chaeological Survey. These findings conclusively establish that the Ganga floods and the migration of residents as mentioned in Mahabharata are historical reality.

Further confirmation of the stated migration to Kausambi has been provided by archaeological findings at Kausambi. Specimens of Painted Grey Ware that was characteristic of Hastinapur before were discovered at Kausambi (near Allahabad).

Another site that finds mention in Mahabharta is Indraprastha. Painted Grey Ware has also been collected from places near the river Yamuna where we now have the zoo and Sundarnagar.

All that this Archaeological evidence supports is the existence of an era of Painted Grey Ware. Iron and copper implements have been found at Hastinapur. Glass ornaments and wheel turned pottery have also been found. A little more about architecture and other aesthetics discovered at Mahabharata sites. Civilizations where Painted Grey Ware has been discovered are known to have mud-brick walls and some kiln fired brick structures. No majestic buildings or palaces as we find described in the epic.No traces or ruminants of glass walls that Duryodhan could not make out or the Shellac house have been discovered at sites associated with Painted Grey Ware.

The figures on the pottery are just geometric and floral designs in monocolor. There are no human figures.

Given the contradictions between the narrative and the archaeological evidence in respect of the events, it is surprising that the epic continues to be not only read but also revered by millions of Hindus all over the world. It is not that there are no rationalists among the patrons of the great epic.

There are some very valid reasons why the epic has remained popular over the centuries all over the world. The Bhagwat Geeta which forms part of Mahabharta is held in respect as a book of spirituality and philosophy by scholars irrespective of their religious faith.

One possible reason for the popularity of the epic is that it is a super mart of human characters of varying shades, of virtues and vices, of situations with which we are all familiar. and of ex

periences that we all come across in our every day life. Ved Vyasa's wisdom lies in the fact that in the epic he has created alomost every conceivable situation and a human character symbolizing every human weakness or virtue.

In the long story there are children born out of wedlock. We have them in our present day society too. But in epic, they get social acceptance as Surya Putra or Ganga putra. There is Dhritrashtra, a noble soul but blinded by love for his own son. A typical case of nepotism when he does not act against evil as the act is being carried on by his son. Dharmaraj cannot speak against injustice when it is being inflicted by his supporter.

Karna stands by Duryodhan even when he is on the wrong side of morality. Even his mother Kunti had disowned Karna during the Tournament. Duryodhan had stood by Karna and gave him royal status a condition to participate in the tournament. Karna's association with the Kauravas is a typical case of loyalty to a friend who stands up in crisis moments.

These and innumerable similar instances enable us to identify ourselves with the characters in the drama.

In the real world we have around us people of all dispositions. Similar is the case in the epic. There is Karna symbolizing charity at its best. Also there is Shakuni symbolizing trickery and cheating at its worst. There is polygamy as also polyandry. There is the most dutiful and meek wife Gandhari who refuses sight just because her husband is devoid of it. On the other hand there is Draupadi who would not rest till the entire clan of Kauravas who dishonored her is eliminated.

Every reader has the option to draw his own conclusions from the events and characters in Mahabharata. Krishna is the Jagadguru. He is also the one who does not mind when Duryodhan on the other side of the battle lines in hit below the belt much against rules of Dharmayuddh. In Bhagwat Geeta his message is "Actoin is the duty-Reward is not thy concern." But in real life situations his message is "When it is war, the important thing is to win."

So many characters on the Kaurav side were killed in the battle in violation of the accepted rules. Krishna never stopped them even though according to him it was a Dharamyuddh. He had

his own justifications for those violations. The teachings and the moral that one can draw from the events in the epic are open to multiple interpretations. There is unlimited choice and this accounts for the immense popularity of the epic.

As on today, the Mahabharata of Ved Vyasa is so different from that of the Archaeologists and the Historians. But that does not prove that Mahabharata is all fiction.

The knowledge and resources at our disposal for archaeological investigations are not perfect. Carbon dating or counting rings on tree stems can provide us some information about the age of an archaeological find. But no one can say for certain that available knowledge can provide information about materials that existed thousands of years ago and may have undergone chemical or physical changes beyond recognition by archaelogists.

There is one more factor that has to be accounted for before any verdict is passed for or against Mahabharata being a Mythological tale or a historical reality.

Instruments that are good enough for experimenting with light within the spectrum range would not be relevant where infra red radiations are to be studied. Similarly what the faithful believes in is well above physical existence. Material Scientific instruments are incapable of measuring what is essentially Para–physical.

At one time Khulja Sim Sim was just a tale from the Arabian nights. We now have sound responsive doors. That is a reality what was at one time just a story tellers imagination.

The rationalist has many arguments to bunk what goes in the name of Mahabharata. But the faithfuls have no use for all that. When the epic Mahabharata was serialized on TV, streets used to be empty. Some among highly educated started their day after the serial. Many others would have a bath before facing the serial. So both the rationalist and the faithful have their way.

May be future excavations reveal some other facts about the Mahabharata era and establish greater congruence between the two versions.

Till then let the scientists refine their tools to interpret the past while the faithfuls rejoice in the wonderful stories that have entertained generations of Hindus all over the world.

C2A/211 Janakpuri,
New Delhi-110058

Date of Pubn. : 31.5.2015 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 June. 2015
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अ वेषु रीरिषः।
वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।

(ऋग् 1/8/6/3)

ऋषि – कुत्स आंगिरसः, देवता–रुद्रः, छन्द–जगती

हे भगवन् रुद्र परमात्मन् आप (न) हमारे (तोके तनये) बाल बच्चों पर; हमारी आयु पर, हमारी गाय आदि दुधारु प ुओं पर और हमारे घोड़ों पर तथा वाहक जानवरों पर और (हविष्मन्तः) यज्ञ करने वाले हमारे वीरों पर (भामितः) क्रोधित मत हो तथा (रीरिषः) क्रोधयुक्त होकर उन्हें कभी भी मत (वधीः) मारना। हे प्रभो! हम (त्वा) आपका (सदम् इत्) सदा ही (हवामहे) आह्वान करते रहेंगे।

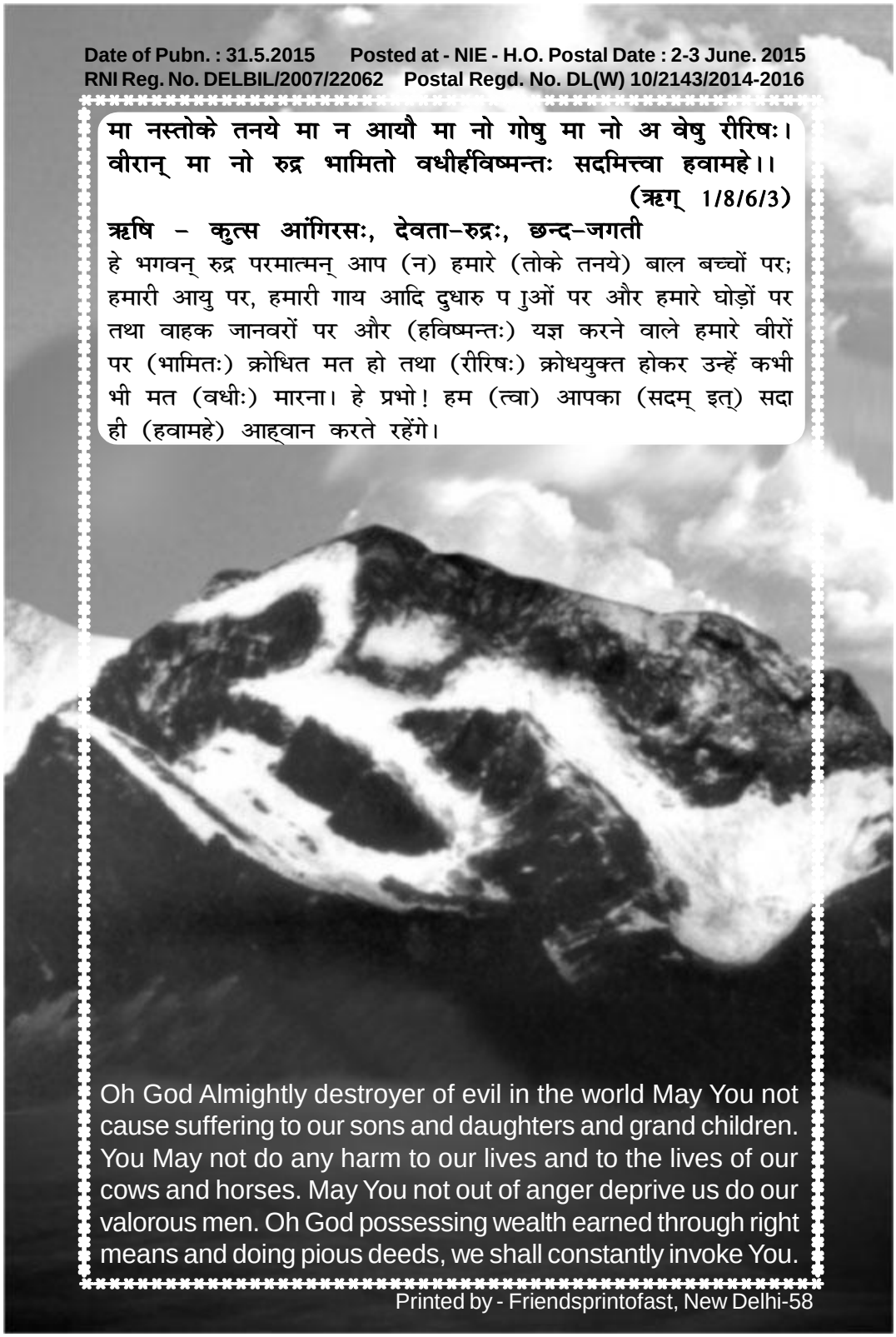

Oh God Almightly destroyer of evil in the world May You not cause suffering to our sons and daughters and grand children. You May not do any harm to our lives and to the lives of our cows and horses. May You not out of anger deprive us do our valorous men. Oh God possessing wealth earned through right means and doing pious deeds, we shall constantly invoke You.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58